मूल्य १० ०० रुपये

तित्थयर

ष ० अक ०९ दिसम्बर २००६

|| जैन भवन ||

ज्ञान से पदार्थों को जाना जाता है,
दर्शन से श्रद्धा होती है,
चारित्र से कर्मास्रव की रोक होती है,
और तप से शुद्धि होती है।

卐

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Groundnut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant:
Post Box No.5
Lucknow Road
Sitapur-2261001 (U.P.)
Ph : 242017/42397/
42073 (05862)
Gram - Sethia- Sitapur
Fax : 242790 (05862)

Registered Office:
143, Cotton Street
Kolkata - 700 007
Ph : 2238-4329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office:
2, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Ph : 22201001/9146/5055
Telex : 217149 SOIN IN
FAX : 22200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - ३० अंक - ०९, दिसम्बर २००६

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता – Editor : Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone : 2268-2655, Website : www.info@jainbhawan.com

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें —
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Subscription for one year : Rs. 100.00, US$ 20.00,
for three years : Rs. 300.00, US$ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Smt. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 2268-2655
and Printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Kolkata - 700 007 Phone : 2241-1006

संपादन
डॉ. लता बोथरा,

॥ जैन भवन ॥

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	सुवर्णभूमि में कालकाचार्य	डॉ. उमाकान्त शाह	४२१
२.	योगशतक	डॉ. इन्दुकला हीराचन्द झवेरी	४२७
३.	सिंहल की राजकन्या (**सुदर्शना**)	आचार्यश्री विजयविशालसेनसूरिजी म. सा.	४३५
४.	रत्नों को मिला जिन मूर्ति का आकार		४४६

मूल्य - १०.०० रूपये

कवरपृष्ठ : गोपाचल पर्वत (ग्वालियर) में स्थित प्राचीन तीर्थंकर मूर्तियाँ

Composed by:
Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007

सुवर्णभूमि में कालकाचार्य

डॉ. उमाकान्त शाह

गुणाढ्य की बृहत्कथा तो अप्राप्य है किन्तु उससे बने हुए बुधस्वामी लिखित बृहत्कथाश्लोकसङ्ग्रह में सानुदास की सुवर्णभूमि की यात्रा बताई गई है। कथासरित्सागर में सुवर्णद्वीप की यात्राओं के कई निर्देश हैं। कथाकोश में नागदत्त को सुवर्णद्वीप के राजा सुन्द ने बचाया ऐसी कथा है।[१]

बृहत्कथा के उपलब्ध रूपान्तरों में सबसे प्राचीन है संघदास वाचक कृत वसुदेवहिण्डि (रचनाकाल-ई० स० ३०० से ई० स० ५०० के बीच)। सार्थ के साथ उत्कल से ताम्रलिप्ति (वर्तमान तामलुक्) की ओर जाते हुए चारुदत्त को रास्ते में लुटेरों की भेंट होती है, लेकिन वह बच जाता है। सार्थ से उसे अलग होना पड़ता है और वह अकेला प्रियंगुपट्टण पहुँचता है जहाँ पहचानवाले व्यापारी की सहायता से वह नया माल लेकर तरी रास्ते व्यापार के लिये जाता है। चारुदत्त अपना वृत्तान्त देता है— पीछे . . . मैंने जहाज को सज्ज किया, उसमें माल भरा, खलासियों के साथ नौकर भी लिये . . . राज्यशासन का पट्टक (पासपोर्ट) भी लिया और चीनस्थान की ओर जहाज को चलाया . . . जलमार्ग होने से (चारों ओर) सारा जगत् जलमय सा प्रतीत होता था। फिर हमलोग **चीनस्थान** पहुँचे। वहाँ व्यापार करके मैं **सुवर्णद्वीप** गया। पूर्व और दक्षिण दिशा के पत्तनों के प्रवास के बाद कमलपुर (ख्मेर), यवद्वीप (जवद्वीप–जावा) और सिंहल (सिलोन–लंका) में और पश्चिम में बर्बर (झांझीबार?) और यवन (अलेकझांड्रिया)[२] में व्यापार कर, मैंने आठ कोटि धन पैदा किया . . . जहाज

---

१. यवन असल में आयोनिआ के लिए प्रयुक्त था। जिस समय वसुदेवहिण्डि और गुणाढ्य की बृहत्कथा रची गई उस समय यवन से अलेक्झाण्ड्रिया उद्दिष्ट होगा।

२. **कथासरित्सागर** (बम्बई-प्रकाशन), तरंग ५४, श्लो० ८६ से आगे, ९५ आगे; ५७, ७२ से आगे; पृ० २७६, २९७; तरंग, ८६, ३३, ६२; तरंग, १२३. ११०. कथाकोश (Tawney's Ed.) पृ० २८-२९.

में मैं सौराष्ट्र के किनारे जा रहा था तब किनारा मेरी दृष्टिमर्यादा में था उसी समय झंझावात हुआ और वह जहाज नष्ट हुआ। कुछ समय के बाद एक काष्ठफलक मेरे हाथ आ गया और (समुद्र के) तरंगों की परम्परा से फैंकाता हुआ मैं उस अवलम्बन से जी बचाकर सात रात्रियों के बाद आखिर **उम्बरावती-वेला** (वेला-खाड़ी) के किनारे पर डाला गया। इस तरह मैं समुद्र से बाहर आया।[१]

यह ब्यान महत्त्व का है। प्रियंगुपट्टण बंगाल की एक प्राचीन बन्दरगाह थी। वहाँ से चारुदत्त चीन और हिन्द एशिया का सफर करता है। चीन से सुवर्णद्वीप जाता है और पूर्व और दक्षिण के बन्दरगाहों, व्यापारकेन्द्रों में सौदा कर ख्मेर, वहाँ से यवद्वीप और फिर वहाँ से सिंहल को जाता है। इस तरह चीन और ख्मेर के बीच में सुवर्णद्वीप होना सम्भवित है।

वसुदेवहिण्डि की रचना बृहत्कल्पभाष्य से प्राचीन है।[२] वसुदेवहिण्डि अन्तर्गत चारुदत्त के बयान से प्रतीत होता है कि जैन ग्रन्थकार इन पूर्वीय देशों से सुपरिचित थे। बृहत्कल्पभाष्य-गाथा में सुवण्ण शब्द प्रयोग से ग्रन्थकार की अपनी सूत्रात्मक शैली का काम चल जाता है क्योंकि लिखने और पढ़नेवाले इसके मतलब से (सुवण्ण शब्द से सूचित सुवर्णभूमि अर्थ से) सुपरिचित थे। और उत्तराध्ययननिर्युक्ति तो स्पष्ट रूप से सुवर्णभूमि का निर्देश करती है।

सुवर्णभूमि के अगरु के बारे में कौटिल्य के निर्देश (अर्थशास्त्र, २, ११) का उल्लेख पहले किया गया है। मिलिन्दपण्ह भी समुद्रपार तक्कोल, चीन, सुवर्णभूमि के बन्दरगाहें, जहाँ जहाज ईकट्ठे होते हैं, का उल्लेख करता है।[३]

---

१. **वसुदेवहिण्डि,** भाग १, पृ० १३२-१४६.

२. आगम प्रभाकर मुनिश्री पुण्यविजयजी की प्रस्तावना, **बृहत्कल्पसूत्र,** विभाग ६.

३. **मिलिन्दपण्ह** (भाषान्तर), सेकेड बुक ऑफ ध इस्ट सिरीझ, वॉल्युम ३६, पृ० २६९–
– "As a ship-owner, who has become wealthy by constantly levying freight in some sea-port town, will be able to traverse the high-seas and go to . . . Takkola or Cina . . . or Suvarnabhumi or any other place where ships may congregate. . . ."
देखो, डॉ० सिल्वाँ लेवि, E'tudes Asiatiques, वॉ० २, पृ० १–५५, ४३१.

निद्देस में सुवर्णभूमि और दूसरे देशों की जहाजी मुसाफरी का निर्देश है। महाकर्म-विभंग में देशान्तर विपाक के उदाहरण में महाकोसली और ताम्रलिपि से सुवर्णभूमि की ओर जहाजी रास्ते से जानेवाले व्यापारियों को होती हुई आपत्तियों की बाते हैं। सिलोनी महावंश में थेर उत्तर और थेर सोण के सुवर्णभूमि में धर्मप्रचार का निर्देश है।[१]

ग्रीक लेटिन ग्रन्थकार भी सुवर्णभूमि, सुवर्णद्वीप का उल्लेख करते है। किसी (Chryse जिसका अर्थ सुवर्ण होता है) द्वीप का, पोम्पोनिअस मेल (ई० स० ४१-५४) अपने De Chorographia में उल्लेख करता है। प्लिनी, टॉलेमी वगैरह ग्रन्थकारों के बयानों में, और पेरिप्लस में भी, इसका उल्लेख है। टॉलेमी सिर्फ किसी-द्वीप के बजाय Chryse Chora (सुवर्णभूमि) और Chryse Chersonesus (सुवर्ण द्वीपकल्प) का निर्देश करता है।

अरबी ग्रन्थकारों के पिछले बयानों को यहाँ विस्तारभय से छोड़ देंगे। किन्तु इन सब साक्षियों की विस्तृत समीक्षा के बाद डाक्टर रमेशचन्द्र मजूमदार ने जो लिखा है वही देख लें। आप लिखते हैं—

"The periplus makes it certain that the territories beyond the Ganges were called Chryse. It does not give us any means to define the boundaries more precisely, beyond drawing our attention to the facts that the region consisted both or a part of mainland as well as an island, to the east of the Ganges, and that it was the last part of the inhabited world. To the north of this region it places "This" or China. In other words, Chryse, according to this authority, has the same connotation as the Trans-Gangetic India of Ptolemy, and would include Burma, Indo-China and Malaya Archipelago, or rather such portions of this vast region as were then known to the Indians. Ptolemy's Chryse Chersonesus undoubtedly indicates Malaya Peninsula, and its Chryse Chora must be a region to the north of it. Now we have definite evidence that a portion of Burma was known in later

---

१. **महाकर्म-विभंग,** डॉ० सिल्वाँ लेवि प्रकाशित, पृ० ५० से आगे देखो, **महावंश,** गाइगर प्रकाशित पृ० ८६ **सुवर्णद्वीप** (डॉ० रमेशचन्द्र मजुमदार कृत) विभाग १, पृ० ९-४०.

ages as Suvarnabhumi. According to Kalyani Inscriptions (Suvarnabhumi-ratta-samkhata Ramannadesa), Ramannadesa was called Suvarnabhumi which would then comprise the maritime region between Cape Negrais and the mouth of the Salvin ... There can also be hardly any doubt, in view of the statement of Arab and Chinese writers, and the inscription found in Sumatra itself, that the island was also known as Suvarnabhumi and Suvarnadvipa ... There are thus definite evidences that Burma, Malaya Peninsula and Sumatra had a common designation of Suvarnabhumi, and the name Suvarnadvipa was certainly applied to Sumatra and other islands of the Malaya Archipelago."[1]

इस तरह डॉ० मजुमदार के अन्वेषण से वर्मा, मलय द्वीपकल्प, सुमात्रा और मलय द्वीपसमूह से अभी पहचाने जाते प्रदेशों के लिएं सुवर्णभूमि शब्द प्रचलित था, और विशेष सुमात्रा और मलयसामुद्रधूनि (Malaya Archipelago) का द्वीपसमूह सुवर्णद्वीप कहा जाता था।

बृहत्कल्पसूत्र की भाष्य-गाथा में, और उत्तराध्ययननिर्युक्त में '**सुवण्ण**' शब्द है जिससे सुवर्ण भूमि या सुवर्णद्वीप दोनों अर्थ घटमान होते हैं। किन्तु चूर्णिकार और टीकाकार (मलयगिरि) जैसे बहुश्रुत विद्वानों ने अपने को प्राप्त आधारग्रन्थ और प्राचीन-परम्परागत ज्ञान के अनुसरण में '**सुवर्णभूमि**' अर्थ दिया है। इस लिये कालकाचार्य दक्षिण-बर्मा, उसके पूर्व के और दक्षिण के प्रदेशों में विचरे थे ऐसा अर्थ घटाना ठीक होगा। वहाँ से आगे वे कहाँ तक गये, और 'अज्ज कालग' ने शेष जीवन में क्या क्या किया,[2] कहाँ विहार किया इत्यादि बातें हमारे सामने उपस्थित न होने से यह खयाल करना कि अनाम (चम्पा) में कालाचार्य (कालकाचार्य) के जाने की परम्परा निराधार है या वह कालक-

---

१. डॉ० रमेशचन्द्र मजुमदार, **सुवर्णद्वीप,** भाग १, पृ० ४८.

२. आर्य कालक के शेष जीवन के बारे में अगर भाष्यकार और चूर्णिकार को कुछ और भी पता होगा किन्तु अपने विवरणात्मक ग्रन्थ में उन बातों का प्रसंग उपस्थित न होने से (अनौचित्य समझकर) वे कुछ आगे न लिख सके। दत्त वाली घटना के अन्त में कहावली-कार सिर्फ इतनी ही लिखते हैं ; कालयसूरि वि विहिणा कालं काऊण गओ देवलोगं। शायद कालक का शेष जीवन इन पूर्वीय प्रदेशों में गुजरा। इस विषय में निश्चयात्मक कुछ कहना शक्य नहीं।

पर की नहीं हो सकती यह शंका निरर्थक होगी। और जैसा आगे बताया है, अज्ज कालक के ब्राह्मणकुल में जन्म होने की जैन परम्परा, कालक को निमित्त और मन्त्रज्ञान होने की परम्परा, वटवृक्ष के नीचे रहने की पंचकल्पभाष्य की गवाही इत्यादि से कालक के अनाम जाने के अनुमान को पुष्टि मिलती है। उत्पलभट्ट की टीका की हस्तप्रतों में वंङकालक से यदि वङ्का से कालक के सम्बन्ध का निर्देश हो तब तो इसको और भी पुष्टि मिलती है।

कालक के व्यक्तित्व को ठीक समझा जाय तब प्रतीत होगा कि उनके लिए यह सब करना शक्य था। वहाँ से वे टोन्किन (दक्षिण चीन) गये यह अनाम (चम्पा) की उस परम्परा का कहना है। जो कालक सिन्धु के उस पार शकस्थान-शककूल-पारसकूल को गये सो कालक पूर्व में बंगाल से बर्मा होकर इन सब प्रदेशों में भी गये यह समझने में कोई असंगतिदोष नहीं रहता।

मगध से आगे जैनधर्म के क्रमशः विस्तार के इतिहास को बिना देखे यह वस्तुस्थिति सम्भवित न लगेगी। महावीर गये थे राढ़ में—पश्चिमी बंगाल में। वह प्रदेश अनार्यों से, असंस्कृत जनों से भरा पड़ा था। महावीर को वहाँ काफी उपसर्ग सहन करने पड़े। वे राढ़ या लाढ़-वासी लोग, जिनको हम primitive people कहते हैं, वैसे थे। पूर्वीय प्रदेशों में वर्मा, आसाम, सयाम, हिन्दी-चीन, मलाया इत्यादि देशों में नाग इत्यादि जाति की प्रागैतिहासिक असंस्कृत प्रजाओं में भारतीय संस्कृति ने जाकर अपने संस्कार फैलाये। यह तो चम्पा, कम्बोज (कम्बोड़िया) इत्यादि के इतिहास से सुप्रतीत है। प्राचीन काल में दक्षिण में जैसे अगत्स्य वगैरह ने यह कार्य किया, पूर्वीय प्रदेशों की ओर महावीर की नजर दौड़ी। सम्भव है कि वे बंगाल की पूर्वीय सीमा तक (शायद बर्मी सरहद तक) गये। राढ़ और उसके प्रदेशों में महावीर-विहार का विस्तृत बयान ग्रन्थों में उपलब्ध नहीं है।

महावीर के अनुगामी स्थविरों ने यह कार्य चालू रक्खा। तभी तो हम स्थविराली में ताम्रलिप्ति, कोटिवर्ष और पुण्ड्रवर्द्धन की शाखाओं के निर्देश पाते हैं। छेदसूत्रकार स्थविर आर्य भद्रबाहु (महावीर निर्वाण वर्ण १७०) नेपाल को गये थे यह भी इसी प्रवृत्ति का सूचक है। पञ्चकल्पभाष्य में गाथा है—'वंदामि भद्दबाहुं, पाईणं सयलसुयनाणिं'—इत्यादि। यहाँ 'पाईणं' का 'प्राचीन-गोत्रीय' ऐसा अर्थ पिछले ग्रन्थकारों ने बतलाया है और 'प्राचीनो जनपदः' ऐसा कहते

हैं[१]। पहारपुर (बंगाल) से उत्खनन में गुप्त कालीन ताम्रपत्र-दानपत्र मिला है जिस में पञ्चस्तूपान्वय (सम्भवतः मथुरा का) के जैनाचार्यों के वहाँ तक के विहार की साक्षी मिलती है।[२]

कम से कम गुप्तराजाओं के शासनकाल तक पूर्वीय भारत में जैन धर्म का प्रचार चालू रहा। फिर दूसरे किन्हीं राजकीय प्रवाहों के प्रभाव से जैन संघ का जमाव पश्चिम और दक्षिण भारत की ओर बढ़ता गया। पूर्व भारत में वर्तमान सराक (श्रावक) जाति के लोग प्राचीन श्रावक (जैन) थे ऐसा कहा जाता है।

इस तरह हम देखते है कि महावीर स्वामी के पश्चात् करीब पाँचसौ वर्ष में दूसरे सम्प्रदायों के साथ जैनों ने भी पूर्व में और उत्तरपूर्व में अपने सिद्धान्तों का प्रचार करने के प्रयत्न किये होंगे, और बंगाल में ई० स० की पाँचवीं शताब्दी तक जैनों के वह प्रयत्न चालू थे। अतः इससे भी पूर्व में बर्मा, अनाम इत्यादि में तथा सुवर्णभूमि से पहचाने जाते प्रदेशों में ऐसा प्रयत्न होने का अगर प्राचीन जैन ग्रन्थों का प्रमाण मिले तब वह असंगत और अशक्य नहीं लग सकता। कम से कम वर्मा, आसाम और नेपाल में जैनाचार्यों के जाने का अनुमान तो हरेक को ग्राह्य होगा। दक्षिण बर्मा से पैदल रास्ते से जैनाचार्य, आगे भी, सुवर्णभूमि से पहचाने जाते प्रदेशों में, जा सकते थे और गये होंगे।

आर्य कालक के समय के बारे में आगे विचार होगा। उनका समय, जैसा कि आगे देखेंगे, ई० स० पूर्व १९२ से १५१ या ई० स० पूर्व १३२ से ९१ के आसपास का है : उस समय में भारतीय व्यापारी इन प्रदेशों में जाते थे यह हम देख चुके हैं। डॉ० मजुमदार लिखते हैं—

"The view that the beginnings of Indian Colonisation in South-East Asia should be placed not later than the first century A.D. is also supported by the fact that trade relations between India and China, by way of sea, may be traced back to the second century B.C.[३] As the Chineses vessels did not proceed beyond Northern Annam till after the first century A.D., it may be pre-

---

१. इस विषय में देखिये, **बुलेटिन ऑफ थ प्रिन्स ऑफ वेल्स म्युझिअम,** वॉ० १ नं०१, पृ० ३०-४०.

२. **एपिग्राफिका इन्डिका,** वॉ० २०, पृ० ५९ से आगे; **हिस्टरी ऑफ बेन्गाल,** वॉ० १, पृ० ४१०.

३. **तोउंग पओ** (T'oung Pao), १३ (१९१२, पृ० ४५७-६१; इन्डियन हिस्टॉरिकल क्वार्टर्ली, १४, पृ० ३८०

sumed that the Indian vessels plied at least as far as Annam even in the second century B.C. A the vessels in those days kept close to the coast, we may conclude that even in the second century B.C. Indian mariners and merchants must have been quite familiar with those regions in Indo-China, and Malaya Archipelago, where we find Indian colonies at a later date."[1]

मगर जैनाचार्यों की जहाजी सफर का, समुद्रयान का, अनुमान करना मुश्किल है। किन्तु वे खुश्की रास्ते से जा सकते थे। इसमें भी बड़ी-बड़ी नदियाँ तो आती ही हैं। बड़ी-बड़ी नदियों के पार करने में जैन श्रमण नाव में बैठ सकते हैं। इस विषय की विस्तृत चर्चा बृहत्कल्पसूत्र, उद्देश ४ सूत्र ३२ से आगे, और इन सूत्रों की भाष्यगाथाओं (गाथा ५६२०) में मिलती है। गंगा या शोण (और सिन्धु, नर्मदा) जैसी भारतीय बड़ी नदियाँ पार करने वाले जैनाचार्यों ने ब्रह्मपुत्रा, ईरावदी जैसी नदियाँ भी नाव में पार की होगी। इसमें कोई प्रतिबंध नहीं है। किनारा सामने नजर मैं आ सके ऐसे जलमार्ग में नाम का उपयोग हो सकता है। बड़ी-बड़ी ऐसी नदियों के रास्ते में भी ऐसी कई जगह (या पहाड़ी दून प्रदेश) होती हैं जहाँ जल खूब गहरा होता है लेकिन सामनेवाला किनारा नजरों से दूर नहीं होता। और इन्हीं नदियों में ऐसे भी जलमार्ग होते हैं जहाँ पाँव ऊपर उठाकर चलकर भी उनको पार कर सकते हैं जैसी कि बृहत्कल्पसूत्रकार एगं पायं जले किच्चा एगं पायं थले किच्चा इत्यादि शब्दों में अनुज्ञा देते हैं। इस तरह अगर खुश्की रास्ते से, बीच में आनेवाली नदियों को नाव में बैठकर या चलकर पार करके, दक्षिण वर्मा, चम्पा, मलाया इत्यादि प्रदेशों में जाना शक्य होता था तब अज्ज कालग, सागर श्रमण और दूसरे जैन श्रमणों का सुवर्णभूमि-गमन धर्मविरुद्ध, शास्त्रविरुद्ध नहीं था।

क्रमशः

---

१. अ. डॉ० आर० सी० मजुमदार, **ऐन्शिअन्ट इण्डिया कॉलनायझेशन इन साउथ-ईष्ट एशिया** (१९५५), पृ० १३.

योगशतक

प्रस्तावना— डॉ. इन्दुकला हीराचन्द झवेरी

चरमावर्त में विद्यमान योगाधिकारियों का अपुनर्बन्धक, सम्यग्दृष्टि आदि में वर्गीकरण तथा प्रत्येक के लक्षण योगबिन्दु (श्लो० १७७-८, २५३, ३५३) की भाँति ही गाथा ९ तथा १३-१६ में दिये गये हैं और उस-उस अधिकारी को दिये जानेवाले उपदेश के विषयों की जो तालिका प्रस्तुत गाथा ३० से ३५ में की गई है उसमें उनके अनुष्ठान का सामान्य कथन आ जाता है। योगबिन्दु की तरह अनुष्ठान के विष, गर आदि प्रकारों की तथा प्रत्येक अधिकारी के अनुष्ठान की ब्यौरे से चर्चा यद्यपि नहीं की गई है, फिर भी सामान्य रूप से इतना सूचित किया है कि प्रत्येक का अनुष्ठान अपनी-अपनी भूमिका के अनुरूप योग ही है, क्योंकि उसमें अपध्यान अर्थात् दुर्ध्यानका प्रायः अभाव होता है तथा सर्वदर्शनसम्मत योग के लक्षण उसमें घटते हैं। (गाथा २१-२)।

प्राप्त भूमिका से ऊपर की भूमिका पर यदि चढ़ना हो तो साधक क्या करे यह दिखलाने के लिए आ० हरिभद्र कतिपय सर्वसाधारण नियम तथा अमुक बाह्य एवं अभ्यन्तर उपाय गाथा ३८ से ५० में कहते हैं। जैसे कि, अपने स्वभाव के आलोचन से, लोगों में अपने बारे में फैली हुई बातों के ज्ञान से तथा शुद्ध योग के व्यापार से प्रवृत्ति के औचित्य-अनौचित्य का विवेक करना, अपने से अधिक गुणवाले के साथ निवास करना और उत्तरगुणों के बहुमान, संसारस्वरूप व राग-द्वेष दोषों के चिन्तन जैसे अन्तरंग उपायों का तथा भयादिरूप अकुशल कर्म आदि के निवारण के लिए गुरुशरण, तप आदि सरीखे बाह्य उपायों का आश्रय लेना। इनमें से निजस्वभावालोचन, जनवाद आदि जैसे कई उपायों का योगबिन्दुगत अध्यात्मनिरूपण में निर्देश है[१]। योगसाधना के इन नियमों का अवलम्बन विकसित भूमिका में विद्यमान साधक को लेने का है, नौसीखिए के लिए तो

---

१. देखो योगबिन्दु श्लोक ३८९ से।

श्रुतपाठ, तीर्थसेवन जैसे स्थूल उपायों का आश्रय पहले लेने को कहा है। (गाथा ५१-२) शास्त्र के अर्थ का ज्ञान होने के पश्चात् वह राग, द्वेष, मोह जैसे अन्तरंग दोषों को लक्ष में रखकर आत्मनिरीक्षण करे ऐसा सूचित किया है। इसके अतिरिक्त चित्तस्थैर्य साधने के लिए रागादि दोषों के विषय और परिणामों का एकान्त में किस तरह चिन्तन करना इसका विस्तृत वर्णन गाथा ५९ से ८० में दिया गया है। चिन्तन की इतनी बातों का निरूपण करने के पश्चात् ग्रन्थकार ने उस सद्विचार के अनुरूप साधक की आहार आदि चर्या कैसी होनी चाहिए इसका संक्षिप्त निरूपण किया है, जिसमें मुक्यतया सर्वसम्पत्करी भिक्षा का स्वरूप सविशेष स्पष्ट किया गया है। (गाथा ८१-२)

इस प्रकार चिन्तन एवं आचरण करते-करते साधक अशुभ कर्मों का क्षय करता है और सानुबन्ध अर्थात् उत्तरोत्तर फलदायी शुभ कर्मों को बाँधकर क्रमशः मुक्ति प्राप्त करता है। (गाथा ८३-५)

योगवंशिका—

इस ग्रन्थ में योगवस्तु का बहुत ही संक्षेप में निरूपण किया गया है। इसमें आध्यात्मिक विकास की प्रारंभिक अवस्था का वर्णन नहीं है, पर बाद की विकसित अवस्थाओं का ही निरूपण है। योग के मुख्य अधिकारी रूप से चारित्री का निर्देश करके उसके आवश्यक धर्मव्यापार को योग कहा है और योग से भी प्रस्तुत में स्थान, ऊर्ण, अर्थ, आलंबन और अनालंबन जैसे पाँच योगभेद अथवा भूमिकाएँ अभिप्रेत हैं। (गाथा २) इनमें से आलंबन एवं अनालंबन इन दोनों का ही अर्थ मूल (गाथा १९) में है, परन्तु उपा० यशोविजयजी ने टीका में पाँचों का अर्थ किया है[१]। इन पाँच भेदों में से पहले दो का कर्मयोग रूपसे तथा

---

१. कायोत्सर्ग, पर्यंकासन, पद्मासन आदि आसन स्थान कहलाते हैं। (२) प्रत्येक क्रिया आदि के समय जो सूत्र बोले जाते हैं उन्हें ऊर्ण अर्थात् वर्ण या शब्द कहते हैं। (३) सूत्रार्थ का ज्ञान अर्थ है। (४) बाह्य प्रतिमा आदि विषयों का ध्यान आलम्बनयोग है। (५) रूपी द्रव्य के आलम्बन के बिना शुद्ध चैतन्यमात्र की समाधि अनालम्बन योग है। षोडशक (१३-४) में भी इन पाँचों भेदों का निर्देश है तथा १४.१ में आलम्बन निरालम्बन का स्पष्टीकरण किया है।

बाद के तीन का ज्ञानयोगरूप से निर्देश किया है[1]। इसके अतिरिक्त स्थान आदि पाँचों के इच्छा, प्रवृत्ति, स्थैर्य एवं सिद्धि जैसे चार-चार विभाग करके प्रत्येक के स्वरूप तथा कार्य दिखलाये गये हैं[2]। (गाथा ४-८)

स्थान आदि उक्त पाँच भेदों को जैनपरम्पराप्रसिद्ध चैत्यवन्दनक्रिया में घटाते हुए ग्रन्थकार कहते हैं कि जो साधक अर्थ एवं आलम्बनयुक्त है उसकी चैत्यवन्दनक्रिया साक्षात् मोक्षफल देनेवाली होती है, जब कि स्थान एवं ऊर्ण योगवाले को वह क्रिया परम्परा से मोक्ष प्राप्त कराने वाली है और सब प्रकार के योग से शून्य व्यक्ति की वह क्रिया तो केवल वाचिक चेष्टा ही बनती है। अतएव वह चैत्यवन्दन का अनाधिकारी है। इसके बाद सद्नुष्ठान के प्रीति, भक्ति, वचन एवं असंग[3] ये चार भेद करके ग्रन्थकार अन्त में आलम्बन व अनालम्बन योग का स्वरूप संक्षेप में समझाते हैं।

ऊपर दिये गये आ० हरिभद्र के योगग्रन्थों के संक्षिप्त परिचय पर से यह तो ख्याल आ सकेगा कि उन्होंने सबमें मुख्यतया चार मुद्दों का समावेश किया है। वे चार मुद्दे हैं : (१) योग का अधिकारी तथा अनाधिकारी कौन? (२) योगाधिकार प्राप्त करने के लिए पहले जो तैयारी करनी पड़ती है उसका स्वरूप। (३) योग्यतानुसार अधिकारियों का भिन्न-भिन्न रूप से वर्गीकरण तथा उनके स्वरूप और अनुष्ठान का निरूपण। (४)योगसाधना के उपाय अथवा योगभेद।

---

१. उपा० यशोविजयजी कर्मयोग एवं ज्ञानयोग को इस प्रकार समझाते हैं :- स्थान तो क्रियारूप ही है तथा ऊर्ण भी उच्चारणरूप एक क्रिया ही है। अर्थ आदि अन्तिम तीन तो साक्षात् ज्ञानरूप ही हैं, जो उपर्युक्त व्याख्या परसे स्पष्ट है। इसके अलावा उपा० यशोविजयजी (गाथा ३) टीका में योगबिन्दुगत अध्यात्म समावेश स्थान योग में, जपरूप अध्यात्म का समावेश ऊर्ण में तथा तत्त्वचिन्तनरूप अध्यात्म का समावेश अर्थयोग में होता है। भावना का भी समावेश स्थान, ऊर्ण एवं अर्थ में समझना चाहिए। ध्यान का समावेश आलम्बन योग में और समता तथा वृत्तिसंक्षय का समावेश अनालम्बनयोग में होता है।

२. इच्छा आदि की व्याख्या के लिए देखो योगदृष्टिसमुच्चय श्लोक २१५ से २१८ और डॉ० भगवानदासकृत गुजराती विवेचन पृ० ७१६-३१।

३. इन चारों की व्याख्या के लिए देखो षोडशक १०.२-८।

इनमें से पहला मुद्दा योगबिन्दु, योगदृष्टिसमुच्चय और योगशतक में एक जैसा आता है। फर्क इतना ही है कि योगदृष्टिसमुच्चय में अचरमावर्तकालीन अवस्था को ओघदृष्टि और चरमावर्तकालीन अवस्था को योगदृष्टि कहा है। योग विंशिका का निरूपण तो देशविरत से ही शुरू होता है।

दूसरे मुद्दे की चर्चा योगबन्दु में पूर्वसेवारूप से, योगदृष्टि समुच्चय में योग बीजरूप से और योगशतक में लौकिकधर्मरूप से की गई है। योगविंशिका में विकसित दशा का ही वर्णन होने से उसमें पूर्वसेवा को अवकाश ही नहीं है। पूर्व सेवा शब्द का प्रयोग तथा उसमें किया गया देव, गुरु इत्यादि के पूजन आदि विषयों का समावेश–ये दोनों बातें जैन परंपरा में आ० हरिभद्र की ही देन हैं।

तीसरे मुद्दे में योगाधिकारियों के भिन्न-भिन्न वर्गीकरणों का समावेश होता है। योगबिन्दु, योगशतक और योगविंशिका में आनेवाला अपुनर्बन्धक आदि का वर्गीकरण एक ही प्रकार का है, जो पहले से जैन परंपरा में चला आता है, परन्तु योगदृष्टि समुच्चयगत तीनों वर्गीकरण (१. आठ दृष्टि, २. इच्छा-शास्त्र सामर्थ्ययोग, ३. गोत्र, कुल आदि योगी) और उनकी परिभाषा की संघटना तो आ० हरिभद्र ने ही सर्वप्रथम की है। इसी प्रकार विष, गर, आदि अनुष्ठान के भेद (योगबिन्दु) तथा प्रीति, भक्ति आदि सदनुष्ठान के भेद (योगविंशिका तथा षोडशक) भी आचार्य हरिभद्र के अपने हैं।

चौथे मुद्दे के बारे में भी हमें नये वर्गीकरण और नई परिभाषा आ० हरिभद्र के ग्रंथों में से मिलती हैं। योगबिन्दुगत अध्यात्म, भावना आदि योगभेदों का और योगविंशिकागत स्थान, ऊर्ण आदि योगभेदों का वर्गीकरण सबसे पहले आ० हरिभद्र ने ही किया है।

इस पर से देखा जा सकता है कि आ० हरिभद्र ने परंपरागत परिभाषा का उपयोग यथाशक्य कम करके योगमार्ग के अनुरूप सर्वसाधारण नई परिभाषा में जैन परम्परा में प्रसिद्ध आध्यात्मिक विकासक्रम का योगरूप से निरूपण करने में सर्वप्रथम आरम्भ किया है। उनकी यह विशेषता तो है ही, पर इससें भी अधिक ध्यान आकर्षित करे ऐसी उनकी विशेषता अथवा मौलिकता तो दर्शनान्तरों में वर्णित योगविषयक सिद्धान्त तथा परिभाषा की जैन सिद्धान्त एवं परिभाषा के

साथ जो तुलना की है और समन्वयवृत्ति दिखलाई है उसमें दृष्टिगोचर होती है। इसका कुछ ख्याल नीचे के उदाहरणों पर से आ सकेगा।

दर्शनान्तरों के साथ तुलना —

योगबिन्दु में योग के अधिकार-अनधिकार की चर्चा के अवसर पर सांख्याचार्य गोपेन्द्र के कथन के साथ संवाद साधते हुए आ० हरिभद्र कहते हैं कि सांख्ययोग परम्परा में निवृत्ताधिकार-प्रकृति से जो बात सूचित होती है वही बात जैन परंपरा में चरमपुद्गलपरावर्त शब्द से सूचित होती है और अनिवृत्ताधिकारप्रकृति शब्द से जो सूचित होती है वही अचरमावर्त शब्द से (योगबन्दु श्लोक १०१-३) कही गई है।

इसी प्रकार जैन सम्मत सम्यग्दृष्टि की भूमिका की बौद्धसम्मत बोधिसत्त्व की भूमिका के साथ तुलना करके दोनों में कितनी समानता है यह दिखलाते हुए आ० हरिभद्र कहते हैं कि ग्रन्थिभेद की भूमिका पर पहुँचे हुए साधक का परिणाम इस कक्षा का होता है कि वह अपनी स्थिति से कभी च्युत भी हो तो अल्पकाल के लिए ही च्युत होगा। उसका अनुष्ठान बाहर से मिथ्यादृष्टि के जैसा भासित होने पर भी अपने परिणाम भेद के कारण वह कभी भी महाबन्ध नहीं करता। (योगबिन्दु २६७-९) बौद्धसम्मत बोधिसत्त्व भी शायद कायपाती अर्थात् शारीरिक दोषयुक्त बने, तो भी चित्तपाती तो कभी नहीं बनता। (२७१) साथ ही वे दोनों परोपकारी, उचित मार्गगामी और गुणरागी होते हैं। (२७२) इसके अतिरिक्त दोनों के व्युत्पत्त्यर्थ में भी समानता है, क्योंकि सम्यग्दर्शन ही बोधि है और वह बोधि जिस सत्त्व अर्थात् जीव में प्रधान रूप से है वह बोधि सत्त्व। (२७३) दोनों में ऊह—संकल्प भी समान प्रकार का होता है; जैसे कि, मैं उत्तम बोधि से युक्त होकर मोहान्धकार में डूबे हुए जीवों को मुक्त करने का यथा शक्ति प्रयत्न करूँगा। (२८५-६)।

ईश्वरवाद और भवकारण की चर्चा के समय आ० हरिभद्र अपने कथन का समर्थन योगाचार्य कालातीत का मत उद्घृत करके करते हैं। कालातीत ने जिस प्रकार शब्दभेद को पारकर वस्तुतत्त्व को एकरूप से देखने का प्रयत्न किया उसे उनके ही शब्दों में आ० हरिभद्र इस प्रकार रखते हैं :- "जो ऐश्वर्ययुक्त है वही हमारे मन ईश्वर है, फिर भले ही वह मुक्त, बुद्ध अथवा अर्हत् के नाम से पहचाना जाता हो। मुक्त आदि तो केवल शब्द के भेद हैं।

उसमें अनादि सादि जैसे भेद तत्तंत् दर्शन में माने गये हैं वे सब सर्वथा निरर्थक हैं, क्योंकि एक तो स्थूलदर्शी व्यक्ति तत्त्व ही नहीं जानता और दूसरी बात यह है कि अनुमान का विषय सामान्य होता है अर्थात् अनुमान वस्तु का सामान्य स्वरूप ही जताता है, विशेष नहीं। अतः विशेषस्वरूप के बारे में एक दूसरे के अनुमान अनुमानाभास ही बनते हैं। तीसरी बात यह है कि चाहे जैसी मान्यता हो, पर परिणाम की उज्ज्वलता हो तो क्लेशक्षयरूप फल एक जैसा ही आता है। यही बात भवकारण के बारे में भी कही जा सकती है। अविद्या, क्लेश, कर्म, वासना, पाश आदि तो उस-उस दर्शन में सम्मत भवकारण के भिन्न-भिन्न नाममात्र ही हैं। उनमें मूर्तत्व, अमूर्तत्व जैसे नानाविध उपाधि भेद कल्पित किये गये हैं वे भी उक्त कारणों से अकिंचित्कर ही हैं।" इस प्रकार कालातीत का मत उद्घृत करके आ० हरिभद्र कहते हैं कि केवल शब्द भेद से चिपके कहना तो कुटिल अर्थात् कुचितिकाग्रहका परिणाम है। सच्चा विचारक तात्पर्य को ही ग्रहण करता है। (योगबिन्दु ३०२-९)।

आ० हरिभद्र ने गुरुसेवा आदि का पूर्वसेवा और योगबीज रूप से जो व्यापक समन्वय किया है वह खास तौर पर उल्लेखनीय है। वह कहते हैं कि अध्यात्ममार्गपर यदि आगे बढ़ना हो तो उसकी तैयारी की दृष्टि से व्यक्ति का मानस इतना अधिक खिलना चाहिए कि वह गुरुवर्ग में केवल धर्मगुरु को ही गुरु न माने पर सब बुजुर्गों को गुरु समझकर उनका आदर-सत्कार करे। वह ऐसे बुजुर्गों अर्थात् गुरुजनों में माता-पिता, कलाचार्य, ज्ञातिजन, विप्र, वृद्ध आदि का समावेश करते हैं। (योगबिन्दु ११०) इसी प्रकार देवपूजन के बारे में भी आध्यात्मिक व्यक्ति, किसी एक विशिष्ट देव में भले ही विशेष श्रद्धा रखता हो, फिर भी सभी देवों का समभाव से आदर करें। (योगबिन्दु ११७-८) आगे जाकर जब वह तप के विषय में कहते हैं तब स्मृतिग्रन्थों में प्रसिद्ध कृच्छ्र, चान्द्रायण आदि तपों का निर्देश करके उनके आचरण का सूचन करते हैं। (योगबिन्दु १३१-५) इसी प्रकार उन्होंने अध्यात्म आदि पाँच योगभेदों में से प्रथम अध्यात्मयोग का विशेष निरूपण इनती विशाल दृष्टि से किया है कि उसमें अधिकार एवं रुचिभेद के कारण भिन्न-भिन्न परम्पराओं में प्रचलित ऊँची-नीची साधनप्रणालियों का समावेश हो जाता है। उदाहरणार्थ अध्यात्म के प्रकारों में उन्होंने प्राथमिक अधिकारी की दृष्टि से पातंजल योगशास्त्र में प्रसिद्ध

जपका तथा ऊपर के अधिकारी की दृष्टि से औचित्यालोचन, आत्मसंप्रेक्षण और मैत्री आदि भावनाओं का उल्लेख किया है। (३८१ से ४०४)।

सर्वज्ञत्व एवं अन्तिम लक्ष्य मोक्ष के विषय में दीर्घकाल से दार्शनिक क्षेत्र में प्रचलित बादविवाद को ध्यान में रखकर आ० हरिभद्र ने उसकी तलस्पर्शी चर्चा की है और इसका हार्द मन में बराबर पैठ जाय इस तरह से बताने का योगदृष्टि समुच्चय में प्रयत्न किया है। उसका सार यही है कि सामान्य सर्वज्ञत्व तो सबको मान्य ही है। जो कुछ मतभेद है वह उसके विशेष स्वरूप के विषय में है। और विशेष तो अतीन्द्रिय होने से छद्मस्थल के लिए तो गोचर ही नहीं है। सर्वज्ञ माने जाने वाले पुरुषों का उपदेश जो भिन्न-भिन्न सा भासित होता है उसमें तो अनेक कारण ही सकते हैं। एक तो शिष्य के कल्याण के लिए शिष्यों की योग्यता के अनुसार जुदा-जुदा उपदेश संभव हो सकता है अथवा तो एक ही उपदेश श्रोताओं के भेद से भिन्न-भिन्न भासित हो सकता है, अथवा ऐसी भी हो सकता है कि देश एवं काल आदि के भेद से भिन्न-भिन्न उपदेश दिया गया हो। इससे सर्वज्ञों का अभिप्राय जाने बिना उसका प्रतिवाद करना ठीक नहीं है और यदि केवल हेतुवाद अर्थात् तर्कवाद से ऐसी अतीन्द्रिय बातों का निर्णय हो सकता तो अबतक कभी का प्राज्ञपुरुषों ने इस विषय में निर्णय कर लिया होता। अतएव ऐसे विषय में शुष्क तर्क त्याज्य है। (योगदृष्टि समुच्चय श्लो० १०३-९ और १३४-४७)

योगशतक में भी आ० हरिभद्र ने दो जगह समन्वय करने का प्रयत्न किया है। एक तो भिन्न-भिन्न दर्शनसम्मत योग की व्याख्या किस प्रकार एक ही वस्तु की द्योतक है यह उन्होंने गा. २२ में दिखलाया है और अन्त में जैन सम्मत कायिक क्रिया और भावक्रिया के बीच का अन्तर बौद्ध परम्परा के वैसे विचार के साथ किस तरह मिलता है यह उन्होंने गाथा ८६-८ में दिखलाया है। ये दोनों बातें हमने उस गाथा के विवेचन में स्पष्ट की हैं।

क्रमशः

सिंहल की राजकन्या

सुदर्शना

आचार्यश्री विजयविशालसेनसूरिजी म. सा.

उन्होंने कैसी ज्ञान की बातें कहीं। कैसी मधुर और कल्याणी उनकी वाणी थी और मुझे उन पर श्रद्धा भी कैसी हुई कि उनकी बात को मैंने अपनी बात मानी! कितना उम्दा नतीजा निकला कि मुझे मंत्रों का महाराजा नवकार महामंत्र मिला। नियम मिले। मैं निर्भय हो गयी। एक बेसहारे को कैसा मजबूत आसरा मिल गया? अरे! देखो तो सही मैं समर्थ सिंहलेश्वर की गौरवशाली राजकन्या बनी! हाँ, हाँ सूगली, गंदी चील मुरदों को नोंच-नोंचकर खाने वाली चीज सिंहल के राज परिवार की प्यारी-दुलारी चहेती राजकुमारी बन गयी। जन्म लेते ही रूप सौभाग्य ऐश्वर्य, सूझ, समझ। गुण का वैभव, महंगी से महंगी चीझ भी सुलभ और सारी सुविधा उपलब्ध हुई। कितने अच्छे मां-बाप एवं कैसे अद्‌भुत सात-सात भाई! क्या मिल गया? कुछ भी तो नहीं था–हां कफन भी तो नहीं था पास में।

हां, इस हरे भरे और ऊंचे परिवार में सब कुछ था पर एक धर्म नहीं था तो वह भी यहां घर बैठे ही मुझे मिल गया। अब तो मैं निहाल हो गई। मेरे तो भाग्य खुल गये भगवंत! भाग्य खुल गये। मगर मैं सोचती हूं ! यह सब कितना विचित्र है? कैसे यह सब हुआ? मुझे बड़ी इंतजारी है यह सब जानने की कि कौन सी शुभ-अशुभ करणी मैंने की और यह सारी घटना दुर्घटना यों घटित हुई।

आप ज्ञानी कृपालु के बिना तो कौन बता सकता है मेरी अपनी बीती कल? आपके पधारते ही मुझे विश्वास हो गया कि मेरा अज्ञान गया और काम हो गया। तो कृपा करिये ना! मेरे अपराध और मेरी उपासना अवश्य इसमें जड़ी-पड़ी होगी।

हाँ, सुदर्शना! तुम सही कहती हो। बिना बीज के फल नहीं, त्यों ही बिना कारण के कार्य होता नहीं। ये जो शुभ-अशुभ फल हम भुगतते हैं उसमें हमारी शुभ-अशुभ चेष्टा, भावना और भाषा कारण है। बड़ा लम्बा है ये जन्म-मरण का विषचक्र! चील के पूर्व के भव में तूने जो किया था वह चील के भव में भोगा और चील के भव में जो बोया वह यहां पाया। कभी कभी बीज तो छोटे होते हैं किन्तु फल बहुत ज्यादा और बड़े भी लगते हैं।

'हाँ? चील के भी पूर्व भव में ?'

'हाँ, राजकुमारी। चील बनने का रहस्य उस भव में छिपा है।'

'क्या थी मैं तब प्रभो !'

'सुनो, हम सुनाएं !'

वैताढ्य पर्वत की दक्षिण श्रेणी की राजधानी गगनवल्लभ नगर में अमितगति विद्याधर राजा राज्य करते थे। वे जैसे प्रतापी थे वैसे ही प्रभावशाली व सज्जन थे। उनके जयसुन्दरी नाम की सुशील गुणवती महारानी एवं संतान में विजया नाम की एकमात्र मनोहर पुत्री थी।

गुण कला और विद्यावती विजया युवा होने पर विशेष सुन्दर और सुपात्र प्रतीत होने लगी।

उसे सभी प्रकार की सुविधा तो थी ही, इकलौती पुत्री होने की वजह से वह माता पिता को जितनी लाड़ली थी उतनी ही स्वयं के रूप सौभाग्य गुण व्यवहार के कारण दूसरों को भी अति दुलारी थी। विद्याधर पुत्री होने के कारण उसके पास आकाश गामिनी वगैरह विद्याएं भी थीं जो उसने स्वयं ने सिद्ध की थीं।

वह स्वभाव से सालस, सरल, उदार और कुतूहली भी थी। समानवय वाली अच्छे घर की लड़कियां उसकी सहेलियां थीं।

सुविधा के साथ फुरसत भी काफी थी अतः सखियों के साथ आमोद-प्रमोद, क्रीड़ा-विनोद और सैर-सफल में उसका समय आनन्द से बीतता था।

स्त्री सुलभ स्वभाव व उम्र के मुताबिक विशेषताएं होना स्वाभाविक ही था।

एक बार वह अपनी सहेलियों के साथ सुरम्य नगर जाने को नगरी से बाहर निकली ही थी कि एक काला सर्प दायें से बायें उतर गया। सहेलियों ने कहा यह तो बड़ा भारी अपशुकन हुआ अब हम आगे नहीं जा सकते।

सज-धज कर तैयार हो कितने उमंग से कैसे अच्छे मौके पर हम जा रहे थे और यह कमबख्त सर्प आड़ा उतर कर मजे में चला जा रहा है। गुस्से में राजकुमारी कांपने और आंखों से आग बरसाने लगी। उत्तेजित हो उसने धनुष्य पर बाण चढ़ाया और सर्प को मौत के घाट उतार दिया।

एक अच्छे और धार्मिक परिवार में पैदा होने पर भी सारी सुख सुविधायें उपलब्ध होते हुए भी विजया में धार्मिक संस्कार न होने के कारण ही वह हिंसादी के ऐसे कार्य कर लेती थी।

श्रावक के कुल में जन्म लेने पर भी जिसमें श्रावक के संस्कार नहीं आते हैं ऐसी संतानों की अन्य कुल की लायी हुई संतान से तुलना की जा सकती है।

वे माँ-बाप धन्य हैं जो अपने संतानों को बाल्यकाल से ही उत्तम संस्कार देते हैं। बचपन से ही उन्हें अच्छे कार्यों की प्रेरणा और बुराई से बचने की शिक्षा देते हैं। श्रावकों के संतानों की आत्मा तो ऊंची है ही मात्र उन्हें अच्छे संयोग देने भर की देर है।

जीव को बड़े पुराने संस्कार हैं कि आनन्द मनोरंजन के लिए कहीं दूर जाना पड़े तो भी जाना, समय और पैसा खरचना पड़े तो मौज से खरचना किन्तु मुफ्त में और बिना तकलीफ के शांति मिलती हो तो भी पाने की कोशिश नहीं करना।

जिस दिन शांति के मूल्य समझ में आते हैं उस दिन सारे कौतुक कूतुहल बाल चेष्टा बनकर रह जाते हैं। मनुष्य को शांति का खजाना हाथ लगता है। किन्तु यह सब रास्ते चलते नहीं हो जाता। जीव को प्रथम तो अच्छे संयोग मिलें–वह उसे टाल न देवे। टाले तो भी, टाल न पाये और कोई शुभ संयोग के प्रभाव में आवे, उससे ज्ञान, विवेक जगे तो कही सारी दुनिया के कोलाहल अशांति के बीच भी शांति मिल जाय।

शांति पानी में प्रतिबिम्ब की भांति जब मनुष्य का मन परमात्मा के चरण में--दर्शन में लीन-स्थिर बनता है तो उसे स्वयं की झांकी मिलती है। और तब उसकी दृष्टि ही बदल जाती है। हमारी गति हमारी तरफ हो जाती है। हम हम तक पहुँच जाते हैं। स्वयं से अधिक कुछ भी महत्त्वपूर्ण नहीं है।

किन्तु बेचारी भोली विजया यह सब क्या जाने ?

उसने सब कुछ जाना था मगर जानने वाले से ही अज्ञान थी।

आज वह सहलगाह को जानी थी। श्रृंगारकर वह तैयार हो रही थीं। सहेलियां आ चुकी थी। हास्य विनोद के फव्वारे उड़ रहे थे। मानो महल में बहार आ गई थी।

महाराजा अमितगति ने प्रभात काल में ही रानीजी को कहा ;

महारानी ! कल ही रत्नसंचया नगरी के नरेश सुवेग राजा का आमंत्रण आया है, मैं तो कल कहना ही भूल गया !

आमंत्रण ! काहे का आमंत्रण ?

बड़ा बढ़िया और मजेका। वे स्वयं के जिनालय में श्री शांति प्रभू की बड़ी पूजा रचा रहे हैं, वार्षिक तिथि के अवसर पर। राजपरिवार, स्वजन वर्ग एवं धर्मीजनों को उन्होंने भाव भरा आमंत्रण भेजा है।

अच्छा बहुत बढ़िया, तो हमें भी जाना होगा ?

हां, जरूर। ऐसे अवसर जल्दी नहीं आते ? चलो तैयार हो जाओ, जरा जल्दी करना। अरे हां, विजया कहां है ? अरी, विजया !

हाँ, बापू ! मैं यहां हूँ, देखिये ना। यह हार कैसा लग रहा है ? आज हम लोग उपवन में जा रहे हैं। ऐसा लुभावना है कि . . . ।

विजया बेटी ! हमें रत्नसञ्चया जाना है।

वहाँ के नरेश ने श्री शांतिनाथ भगवान की महापूजा रचाई है बेटी। बड़े प्रेम और आग्रह से निमंत्रण भेजा है। हमें जल्दी पहुँचना चाहिये।

पिताजी !

हाँ, बैटी !

देखिये ना ये मेरी सहेलियां कब की आकर बैठी हैं। हम उपवन जायें . . .।

नहीं बेटी, ये तो फिर भी हो सकता है, पूजा के अवसर जब चाहें तब तो नहीं आते। तुम और तुम्हारी सहेलियां समझदार है। आज तो हम सबको पूजा में जाना ही है। इन कार्यों में दूसरा विकल्प होना ही नहीं चाहिये। बेटी धर्म के

कार्यों को कभी भी टालना नहीं चाहिये। यदि हमने आज टाला तो कल भी टालेंगे और टालते ही चले जायेंगे।

विजया की इच्छा तो नहीं थी किन्तु पूजा के आमंत्रण एवं पिता के वचन को वह टाल नहीं सकी।

उत्तम कुल में उत्पन्न होने वालों को कितने ही गुण सहजता से प्राप्त होते हैं, उसमें एक गुण है दाक्षिण्यता। दाक्षिण्यता के ही कारण अनिच्छा से भी धर्म कार्य-उत्तम करणी हो जाती है जो महत्त्व का कार्य कर जाती है।

उसने अपनी सखियों को समझाकर रवाना किया। वह समय पर माता के साथ रत्नसंचया नगरी के श्रृंगार श्री शांतिनाथ प्रभु के दरबार में मंदिरजी में आयी। पूजा प्रारम्भ हो चुकी थी।

अति उत्तुंग और भव्य जिनालय में बिराजमान श्री शांतिप्रभु सुशांत और आह्लादक प्रभा और प्रतिभा फैला रहे थे। वहां आने वाले मानो प्रभु में खो जाते थे। प्रभु के हो जाते थे।

विजया प्रथम तो बेमरजी से फिर कुछ कौतुक कूतुहल वृत्ति से यहां आई थी। किन्तु जिनालय की अपूर्व शांति, शांत सुधारसंपूर्ण श्री शांतिनाथ प्रभु की प्रतिमा, मनमोहक आंगी, सुगन्धी, उत्तम द्रव्य और पावन वातावरण का उस पर अद्‌भुत असर हुआ। वह ज्यों-ज्यों परमात्मा को गहराई से निरखती गई, त्यों-त्यों वह परमात्म भाव से भरती गई।

हम जो भी कुछ देखते-सुनते-चखते-सूंघते या स्मरण करते हैं—उसमें यदि गहराई आ जाती है तो हम सारे के सारे उसी से भर जायेंगे। अच्छा हो तो अच्छे से, बुरा हो तो बुरे से। यदि परमात्मा के दर्शन-स्मरण से गहराई में उत्तर सकें और उससे भर जायें तो निश्चित रूप से अंतर आत्मा में परिवर्तन होने लगता है। मन में स्वच्छता और उल्लास आता है।

राजकुमारी का भी भावोल्लास बढ़ने लगा क्योंकि अति श्रेष्ठ वाद्यों की संगत वाली अद्‌भुत रागिणी में आबद्ध प्रभु की गुण गरिमा सुंनकर उसको प्रथम बार परमात्मा तीर्थंकर देवों की महानता पर अत्यंत आदर, बहुमान और भक्ति पैदा हुए।

उस वक्त के महान् महाराजा और विजयी योद्धा भी भगवान् के गुण गाते, ताल-मंजीरे बजाते, झूमते थे और अप्सरा जैसी रूपगर्विता भी मान छोड़कर प्रभुजी के सम्मुख बालक की तरह नृत्य करती थी। सभी सरल और नम्र बनकर अपने जीवन की धन्यता का अनुभव कर रहे थे। मधुर साज में कर्ण प्रिय आवाज साफ-साफ सुनाई पड़ती थी जो सभी के हृदयों को उत्तम भावों से भर रही थी।

यह सब देख सुन गहन सोच में पड़ी विजया की चेतना जागकर चमक उठी। उसके रोम-रोम हर्षित हो उठे। आज प्रथम बार उसकी जीवंत क्षितिज पर समझ का यह प्रकाशित तारा टिमटिमा उठा कि जो आनन्द और शांति वीतराग की भक्ति में है–वह अन्यत्र मिलना मुश्किल है।

आखिर यह जीव जो भी कुछ करता है आनन्द पाने को ही तो करता है। और आनन्द कहीं लेने नहीं जाना है अपने में ही भरा पड़ा है।

ओ हो. . . मैंने भी आनन्द पाने को क्या क्या किया? कहां कहां घूमी और भटकी। समुद्र, नदियां, झरने, उपवन, पहाड़, गिरिशैल, क्रीडाशैल, विहार त्योहार पर्व और मेले इन सबका मुझे भी कैसा रस लगा था। मैं समझती थी कि मुझे आनन्द मिलता है किन्तु आज पता चला कि सच्चा आनन्द तो आज मिला। सारी काया, बुद्धि, प्राण, मन रोम-रोम सारी इन्द्रियां आनन्द से भर गये हैं। और यह आनन्द भी कितना सुलभ है। कोई क्लेश नहीं, कोई व्यग्रता नहीं। अनायास ही आनन्द की उपलब्धि।

धन्य है प्रभु, आपको धन्य है। आप कितने महान हैं। मैं तो कैसी बेबूझ, गंवार और नादान रही कि आपको पहचान भी नहीं पायी। आप तो दया के सागर हो। ओ देवाधिदेव! मुझे भी आपकी भक्ति और भक्ति का आनन्द सदा मिला करे यही अभिलाषा है।

पूजा में बैठी वह बड़े ध्यान और तन्मयता से प्रभु को निरख रही थी और उनके गुणगान सुन रही थी। उसको इतना आनन्द आ रहा था कि रोम रोम उल्लसित हो उठा। उसको समकित की प्राप्ति हुई। सम्यग् दर्शन उपलब्ध हुआ। शांति व स्वयं के मूल्य समझ में आये। आज तक की व्यर्थता का भी बोध हुआ। उसकी दृष्टि बदल गयी। जीवन साफल्य की राह में इच्छा कांक्षा ने करवट बदली।

एक वक्त का वाकया है, वह कोई काम को शीघ्रता से जा रही थी। रास्ते में उसकी नजर कुछ साध्वियों पर पड़ी। तुरंत वह वहां उतर आई। भावपूर्ण वन्दना कर स्वयं के पास जो खाद्य पदार्थ थे वे आग्रह कर भक्ति पूर्वक बोहराये। मन ही मन वह इन साध्वियों के ज्ञान-वैराग्य और त्याग का अभिनंदन - भाव वंदन करती रही और विहार के श्रम से श्रमित साध्वियों की सेवा सुश्रुषा करती प्रमोद पाती रही। उसके आत्म विकास की क्षितिज पर यह प्रथम प्रकाश था जिससे उसे अद्‌भुत संतोष और तृप्ति का अनुभव हुआ।

उसे सदा गुरू महाराज और जिनेश्वरदेव के दर्शनों की अभिलाषा रहती थी। मंदिर व महाराज सा को छोड़कर लांघकर आगे जाना वह उचित नहीं मानती थी।

एकबार फिर वह आसमान से गुजर रही थी। उसने पृथ्वी का सघन वृक्ष वाले उपवन, द्राक्षावन के मध्य ऊँचे महाशिखर वाला भव्य जिन मंदिर देखा। चाहे जितनी व्यग्रता व जल्दी हो पर सहसा वह जिनदर्शन को कभी नहीं टालती थी। पता लगने पर तो दर्शन किये बिना आगे बढ़ना मुश्किल होता।

संध्या हो चुकी थी। नगर से दूर निर्जन प्रदेश में यह मंदिर था। देर भी हो रही थी। मंदिर के नजदीक आते ही उसे सुमधुर गीत, मंदताल और मंजूल झंकार सुनाई दी। यह आवाज और खुशबू निराली ही थी। बड़ी सावधानी से वह आगे बढ़ी और आहिस्ता आहिस्ता मंदिर में आयी। वहां जो देखा वह अचंभे में पड़ गई, थंबे के पास चुपचाप बैठ गयी। वह दृश्य अद्‌भुत अपूर्व था।

अति रमणीय तोरण स्तंभ से सुशोभित उस विराट मंदिर में विराजित श्री ऋषभदेव भगवान के भव्य चतुः मूर्ति बिंब के सामने बहुत सारी देवियां भक्ति से भरे हृदय से तालबद्ध नृत्यकर रही थीं। ये देवियां नृत्य गीत में इतनी सराबोर-लयलीन थीं कि विजया मंदिर में आई, अंधेरे कोने में थंभे के सहारे आकर बैठ गई–यह भी किसी ने नहीं जाना।

बैठी-बैठी विजया इन देवियों को, उनके रूप सौभाग्य और सौन्दर्य को, उनकी शक्ति, भक्ति और स्तुति को, उनके वस्त्र, जेवर और कला कौशल को आदर से निहारती रही। भक्ति भाव का अभिनन्दन करती चुपचाप बैठी रही। सांझ ढल रही थी, उसे जल्दी ही जाना चाहिये था किन्तु वह भी आनन्द विभोर हो गई थी।

इतने में . . .

इतने में नृत्य करती एक देवांगना का पायल उसके पैर से निकला और दूर पीछे बैठी विजया की गोद में जा गिरा।

पहले तो वह चमकी फिर दुर्लभ रत्नों जड़ी पायल को देखते ही उसकी आँखें विस्मय - आनन्द और संदेह से फैल गई। दिव्य जेवर को अपने आप आया जानकर और देवियों को अपने गीत नृत्य में लीन देखकर उसका मन ललचाया। उसने उसे छुपा लिया। स्त्री सहज स्वभाव के वश हो धीरे से उठकर बाहर आयी और घर की ओर रवाना हो गयी।

वह राजा की बेटी थी और उसे किसी चीज की कोई कमी नहीं थी। जरूरत से ज्यादा जेवर उसके पास थे। जो भी कुछ मंहगा और दुर्लभ कहलाता था, सब उसके लिए सुलभ और सरल था। पायल भी बिना जोड़ी की-एक ही थी जो पैर में पहनना संभव नहीं था। फिर युवती कन्या के पास कीमती और पराइ चीज! शक-सन्देह का कारण। ऐसी चीज को उसने मात्र स्त्री स्वभाव से चुरायी, वह भी जिनेश्वर देव के मंदिर से चुरायी।

इस पायल ने तो उसे मुसीबत में डाल दिया। आफत ऐसी हो गयी कि पूछो मत। बेचारी भोली और भली विजया अस्वस्थ और चंचल हो गई। पायल पास में रखे तो डर और घबड़ाहट इतनी बढ़ जाती कि वह अपने आपको सम्हाल नहीं सकती। यदि कहीं छुपाकर रखती तो किसी के ले जाने की चिंता सताती और वह बार बार देखने जाती, मैं लोगों की नजरों में आ रही हूँ मुझे टिकटिक कर देख रहे हैं ऐसा अनुभव करती।

उसके सर में तनाव, हृदय में धड़कन बढ़ने लगी। किसी अज्ञात भयने उसे घेर लिया। जैसे-जैसे वह अपने को सम्हालने की कोशिश करती गई त्यों त्यों वह विह्वल होती गई। उसका मानसिक संतुलन बिगड़ गया और अचानक हृदय बंद हो गया और वह मरकर भृगुकच्छ नगर के वनखण्ड में चील होकर उत्पन्न हुई।

सुदर्शना! यह सारी घटना-दुर्घटना का विषचक्र सतत् चला आ रहा है। बेचारा जीव इसमें असहाय की तरह फंसा है। किन्तु सही ढंग से थोड़ी कोशिश करे तो छुटकारा पा सकता है।

सुदर्शना ! अब तुम अच्छी तरह से समझ चुकी होगी कि वह चील मरकर यहाँ राज परिवार में पैदा हुई तुम्हीं वह हो।

वत्से ! तूने रास्ते से जाते-निरपराधी सर्प को मारा तो वह सर्प ने म्लेच्छ बनकर निरपराधी तुझे मारा।

बैर तो किसी से भी कभी भी नहीं बांधना। बैर के बीज को ऐसे नुकीले फल लगते हैं कि पिंड़ छुड़ाना मुश्किल हो जाता है। मालूम होता है कि बिना वजह, निस्कारण हमें सताया जा रहा है, हमने कुछ भी तो खराब काम नहीं किया। सही तो यह है कि कारण के बिना कोई भी कार्य संभव नहीं है। यहां तो वही होता है जो होना चाहिये था।

उसी तरह जीवन में अच्छे बीजों का भी अपना अच्छा परिणाम है। विजया के ही भव में तू शांतिनाथ परमात्मा की पूजा में गयी। वहाँ प्रभु एवं पूजा भक्ति को देख तू प्रभावित और पुलकित हुई। उससे तू धर्म के अभिमुख हुई। तब से ही तुझे जिन मंदिरों के मुनि भगवंतों के दर्शनों की उत्कंठा रहने लगी। यही कारण है कि चील के भव में तुझे असह्य पीड़ा और घोर निराशा में भी नमस्कार महामंत्र, अरिहंत के शरण धर्म का सुनते ही श्रद्धा हुई।

याद रखो ! एक बार धर्म किया तो आत्मा दुबारा उसे शीघ्र ही स्वीकार करने को राजी ही जाती है क्योंकि धर्म आत्मा का अपना जीवन है और फिर चाहे तो तुम धर्म को छोड़ दो किन्तु धर्म तुम्हें नहीं छोड़ेगा। कहीं भी आकर सम्हालेगा क्योंकि तुमने धर्म किया था।

उसी भव में सुदर्शना ! तूने गुरुओं की सेवा भक्ति की थी इसलिए चील के भव में अन्त समय तुझे गुरु मिले। उन्होंने आराधना कराई। नवकार दिया और तुझे ममता और विद्वेष छोड़ने की सलाह दी। उनका उपदेश तुझे भाया और समझ में आया। सच ही गुरुओं की सेवा कभी निष्फल नहीं जाती। सारी दुनिया साथ छोड़ सकती है किन्तु धर्म कभी भी धोखा नहीं देता। अपने बेगाने हो सकते हैं किन्तु धर्म कभी भी हमें नहीं ठुकरायेगा। धर्म रुचि और गुरु सेवा के प्रताप से ही तुझे यहां धर्म की प्राप्ति और जाति स्मरण ज्ञान की उपलब्धि हुई। उत्कट भक्ति से गुरु सेवा करने वाले का मुकाबला चक्रवर्ती भी नहीं कर सकता।

तूने देवांगना का नुपूर उठा लिया। अतः तुझे तेरे बच्चों से वियोग हुआ। पायल चुरा लेने के बाद भय-चिंता के कारण तेरा ध्यान बिगड़ गया और वह अधर्म ध्यान यानी आर्तध्यान हुआ और उसी में तेरी मृत्यु भी हो गयी। इस दुर्ध्यान के कारण तुझे तिर्यंच पक्षी की योनि-याने उत्पत्ति मिली। बड़ा दुखद है यह संसारचक्र ! यहां थोड़ी सी गलतियां या नादानी के अति घोर परिणाम आते हैं।

सुदर्शना ! तुझे अब अच्छी तरह समझ में आया होगा कि तेरा अपना खुद का हाल। तेरे तीन भव तेरे सामने स्पष्ट हो चुके। गये बीते को रोने से कोई फायदा नहीं। गये बीते से ज्ञान लो–अनुभव लो-कुछ सीखो और अपने भविष्य को सुधार लो, यही उपदेश ही वीतराग का। किसी के भरोसे बैठे मत रहो। अपने आपको जगाओ, अपने आपको सम्हालो।

राजा वगैरह सभी गुरु महाराज के ज्ञान भरे उपदेश और सुदर्शना की चील से भी आगे की जीवनी सुनकर चकित हो गये। उनको यह भी समझ में आया कि सुदर्शना की बात मात्र भ्रमणा नहीं है उसमें गहरा तथ्य है। जिसे झूठ कहकर टाला नहीं जा सकता ऐसा तथ्य है।

सुदर्शना बोली–आपने बताया वह सब अब मुझे भी ऐसा याद आ रहा हैं मानो कल की बात। बिल्कुल प्रत्यक्ष हो गया है सारा मामलाँ। आप ज्ञानी प्रभु की बलिहारी है। ज्ञानियों से तो कुछ भी छुपा नहीं। कैसी नादानी करली मैंने ? कुछ काम में नहीं आया था वह भी दूसरों के हाथ गया। आज जितनी अकल समझ विजया के भव में मिली होती तो आज अवश्य दीक्षा उदय में आ जाती।

राजा ने पूछा– भगवन् ! ऐसे तो अपने सभी के भव होते होंगे ? कितने ही भव होते होंगे ? ऐसी गलतियाँ–पाप, क्लेश, बैर, छीना झपटी यह सब तो बड़ी तेजी से चल रहा है यहां सारी दुनिया में। तब तो इसका अन्त कहां ?

हां, राजन ! हम सभी इस त्रिलोकी संसार में अनादिकाल से भिन्न-भिन्न शरीर लेकर भटक रहे हैं। अपनी सबकी आत्मा अलग अलग और स्वतंत्र है। स्वयं का किया स्वयं को ही भुगतना होता है। धर्म का आधार लेने से आत्मा का अपना अनन्त बल पैदा हो सकता है। अपना स्वयं का ज्ञान पैदा हो सकता है। इस दुष्टचक्र से छूटने का ज्ञान और बल जो हकीकत में तो हमारे अन्तर में छुपा पड़ा है–वह प्रकट हो जाये, हमें मिल जाये तो हम सारी बुराई और

खराबी को जीत जाते हैं। जो अपनी बुराई को जीत गया वह सारी दुनियां जीत गया, वह स्वयं को जीत गया। स्वयं को पा गया। स्वयं को खोकर सारा संसार भी पाया तो कुछ भी नहीं पाया। किन्तु यह सारी समझदारी और फतहमंदी के लिये प्रथम आवश्यकता है धर्म की। जिन साधनों के सेवन से आत्मा शुद्ध और प्रबल बनती है उसी को धर्म कहा जाता है। आखिर धर्म की जय होती है और भव हार जाता है।

प्रभु ! बड़े काम की चीज है यह धर्म। लेकिन बड़ा कठिन काम होगा। आखिर वह भवों से जन्म मरण और विपदा सें छुड़ाता है तो इतना आसान थोड़ी ही होगा कि हर कोई कर ले।

क्रमशः

रत्नों को मिला जिन मूर्ति का आकार

शास्त्रों में नव रत्नों का उल्लेख प्रमुख ग्रहों के हिसाब से महत्त्वपूर्ण माना जाता है। इन नवरत्नों की उत्पत्ति क्रमशः सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, वृहस्पति, शुक्र, शनि और राहु आदि प्रधान नवग्रहों की पृथ्वी के सतत् प्रधान स्थानों पर सीधे किरणों के पड़ने के प्रभाव से उन ग्रहों में विद्यमान विशेष तत्त्वों से होती है। यही कारण है कि जैसा जिस नवग्रह का रंग होता है उस ग्रह से सम्बन्धित रत्न को भी वैसा ही रंग प्राप्त होता है। ये नवरत्न हैं लहसुनिया Cat's eye, पुखराज Sapphire, पन्ना Emerala, नीला Blue Sapphire, माणक Ruby, हीरा Diamond, मोती Pearl, मूँगा Coral, गोमेदक Zircome। इनके अलावा और भी रत्न पाये जाते है जिनकी पूर्ण संख्या नवरत्नों के समेत ८४ बतायी गयी हैं जिनमें Agate, Amazonite, Amber Jade, Jasper, Garnet, Coral, Crystal आदि होते हैं। साधारणतयाः इन नवरत्नों का व्यवहार आभूषणों में होता है लेकिन जब इन्हें जिन मूर्ति का आकार मिलता है तो ये बेशकीमती के साथ-साथ भव्य और अमूल्य बन जाती है।

यह रत्नों की जिन मूर्तियाँ और स्फटिक में निर्मित अष्टापद की प्रतिकृति जो जैन सेन्टर ऑफ अमेरिका, न्युयार्क में स्थित जिनदेरासर में प्रतिष्ठित होनेवाली हैं, सकल जैन समाज के दर्शन के लिए दिनाँक ११ और १२ नवम्बर को कांकरिया पार्क ५, मिडिलटन स्ट्रीट, कोलकाता में रखी गयी। कार्यक्रम का शुभारम्भ भव्य समारोह के साथ मुनि भगवन्त श्री धर्म चन्द्रविजयजी महाराज साहब एवं, विचक्षण ज्योति महामांगलिक प्रदात्री प्रवर्तिनी श्री चन्द्रप्रभाश्री जी महाराज साहब, आचार्य महाप्रज्ञजी की योग्य शिष्या श्री निर्वाणश्रीजी महाराज साहब, उपाध्याय श्री यशाश्री जी महाराज साहब के सान्निध्य में हुआ। समारोह का प्रारम्भ प्रवर्तिनी श्री चन्द्रप्रभाश्रीजी के मंगलाचरण और आशीर्वचन से शुरु हुई। उन्होंने डॉ०

रजनीकान्त शाह, श्री जय कुमारजी कांकरिया और डॉ. लता बोथरा के सराहनीय कामों की अनुमोदना की। श्री निर्वाणश्री जी महाराज के आशीर्वचन के उपरान्त उपाध्याया श्री यशाश्रीजी महाराज ने डॉ० रजनीकान्त शाह का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी उपलब्धियों के विषय में बताया।

पुस्तक एवं डी.वी.डी. विमोचन— प्रमुख अतिथि स्वामी प्रभानन्दजी महाराज (सचिव, रामकृष्ण मिशन इन्स्टीट्यूट ऑफ कल्चर गोलपार्क, कोलकाता) द्वारा 'अष्टापद यात्रा-गवेषणात्मक साहित्यिक समदृष्टि' लेखिका डॉ० लता बोथरा किताब का लोकार्पण किया गया। स्वामीजी ने अपने सारगर्भित भाषण में आदिनाथ ऋषभदेव और अष्टापद क़िताब का उल्लेख करते हुए ऋषभ संस्कृति के विषय में बताया।

अष्टापद पर हुए शोध कार्यों एवं लेखों के संकलन का डी.वी.डी. डॉ० शाह द्वारा बनाया गया जिसका विमोचन माननीय सांसद श्री सुधांशु शील द्वारा किया गया। श्री सुधांशु शील ने अपने वक्तव्य में जैन समाज के धार्मिक कार्यों की प्रशंसा की।

डॉ० अभिजीत भट्टाचार्य द्वारा पहली बार बंगला में अनूदित 'आत्मजयी' पुस्तक का विमोचन प्रवर्तिनी श्री चन्द्रप्रभाश्रीजी महाराज साहब के करकमलों से हुआ। यह पुस्तक स्वर्गीय प्रवर्तिनी श्री विचक्षणश्री जी की जीवनी पर आधारित है। किस प्रकार उन्होंने शरीर का ममत्व छोड़ आत्मा पर विजय प्राप्त की।

जानेमाने प्रख्यात् विद्वान, राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त, आचार्य तुलसी और हेमचन्द्र पुरस्कार से सम्मानित कलकत्ता विश्वविद्यालय के प्रो० डॉ० सत्यरंजन बनर्जी जो पिछले पचास साल से जैन धर्म के सभी सम्प्रदायों से जुड़े हुए हैं उन्हें इस अवसर पर समस्त कलकत्ता जैन समाज की तरफ से प्रज्ञापुरुष की उपाधि से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर उन्हें एक

प्रशस्ति पत्र भी दिया गया। डॉ० बनर्जी ने अपने भाषण में समस्त जैन समाज से अपील की कि जैन साहित्य में बहुत ही गूढ़ विषयों पर उल्लेख किया हुआ है जिस पर गहन अध्ययन आवश्यक है। श्रीमती माला बैद ने डॉ० सत्यरंजन बनर्जी का संक्षिप्त परिचय देते हुए उन्हें जैन समाज का गौरव बताया एवं उनके योगदानों की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

इस समारोह में प्रवर्तिनी श्री चन्द्रप्रभाश्री जी महाराज साहब की योग्य शिष्याओं श्री रत्ननिधिजी महाराज साहब और श्री पुण्यनिधिजी महाराज साहब को विश्वज्योतिष विद्यापीठ के उपकुलपति आचार्य डॉ० रामकृष्ण शास्त्रीजी द्वारा एम.ए. (ज्योतिष शास्त्र) की डिग्री प्रदान की गई। डॉ० रामकृष्ण शास्त्री द्वारा जैन साधु-साध्वियों द्वारा इस क्षेत्र में किये जा रहे अध्ययन की प्रशंसा की।

अष्टापद के विषय में जानकारी देते हुए डॉ० लता बोथरा ने अपने वक्तव्य में अष्टापद की अवस्थिति और उससे जुड़े हुए कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्यों को समाज के सम्मुख रखा और कुछ नयी शोध जानकारियों से अवगत कराया।

अन्त में पंच परमेष्ठी नमस्कार और मंगलाचरण के साथ दीप प्रज्वलित कर रत्न निर्मित मूर्तियों के दर्शन का प्रारम्भ किया गया। आचार्य रत्नाकर सूरिजी महाराज, आचार्य जैकुंज सूरिश्वरजी और आचार्य मुक्तिप्रभ सूरिजी ने भी जिन मूर्तियों का दर्शन किये। दिनांक ११ और १२ नवम्बर को हजारों-हजारों लोगों ने जिन मूर्ति दर्शन कर प्रभु भक्ति का लाभ लिया। दिनांक १२ नवम्बर को हरियाणा के राज्यपाल महामहिम श्री ए. आर. किदवई साहब ने भी इन मूर्तियों के दर्शन कर डॉ० रजनीकान्त शाह की भूरि-भूरि प्रशंसा की जिन्होंने विश्व के कोने-कोने से रत्न पत्थरों को संग्रह कर इन मूर्तियों का निर्माण कराया। जैन समाज के गौरव प्रतीक श्री हरखचन्द्रजी, जयकुमारजी कांकरिया परिवार ने इस विशाल मंदिर की प्रतिकृति का समस्त समाज को दर्शन कराने का पुण्य लाभ अर्जित किया।

JAIN BHAWAN PUBLICATIONS

P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone: 2268 2655

English :

1.	Bhagavati-sutra-Text edited with English translation by K. C. Lalwani in 4 volumes:		
	Vol - 1 (satakas 1- 2)	Price : Rs.	150.00
	Vol - 2 (satakas 3- 6)		150.00
	Vol - 3 (satakas 7- 8)		150.00
	Vol - 4 (satakas 9- 11)		150.00
2.	James Burges - The Temples of Satrunjaya. Jain Bhawan. Kolkata ; 1977. pp. x+82 with 45 plates	Price : Rs.	100.00
	(It is the glorification of the sacred mountain Satrunjaya.)	Price : Rs.	50.00
3.	P. C. Samsukha - Essence of Jainism translated by Ganesh Lalwani.	Price : Rs.	15.00
4.	Ganesh Lalwani - Thus Sayeth Our Lord,	Price : Rs.	15.00
5.	Verses from Cidananda Translated by Ganesh Lalwani	Price : Rs.	15.00
6.	Ganesh Lalwani - Jainthology	Price : Rs.	100.00
7.	Lalwani and S. R. Banerjee-Weber's Sacred Literature of the Jains	Price : Rs.	100.00
8.	Prof. S. R. Banerjee Jainism in Different States of India	Price : Rs.	100.00
9.	Prof. S. R. Banerjee	Price : Rs.	50.00
	Introducing Jainism	Price : Rs.	
10.	Smt. Lata Bothra- The Harmony Within	Price : Rs.	100.00
11.	Smt. Lata Bothra- From Vardhamana-to Mahavira	Price : Rs.	100.00

Hindi :

1.	Ganesh Lalwani - Atimukta (2nd edn) Translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	40.00
2.	Ganesh Lalwani - Sraman Samskriti Ki Kavita, Translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	20.00
3.	Ganesh Lalwani - Nilanjana, Translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	30.00
4.	Ganesh Lalwani - Chandan-Murti Translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	50.00

5.	Ganesh Lalwani-Vardhaman Mahavira	Price : Rs.	60.00
6.	Ganesh Lalwani-Barsat ki Ek Raat,	Price : Rs.	45.00
7.	Ganesh Lalwani -- Panchdasi.	Price : Rs.	100.00
8.	Rajkumari Begani-Yado ke Aine me.	Price : Rs.	30.00
9.	Dr. Lata Bothra - Bhagavan Mahavira Aur Prajatantra	Price : Rs.	15.00
10.	Dr. Lata Bothra - Sanskriti Ka Adi Shrote, Jain Dharm	Price : Rs.	24.00
11.	Prof. S.R. Banerjee - Prakrit Vyakarana Praveshika	Price : Rs.	20.00
12.	Dr. Lata Bothra - Adinath Risabdev Aur Asthapad	Price : Rs.	250.00
13.	Dr. Lata Bothra - Asthapad Yatra		

Bengali :

1.	Ganesh Lalwani-Atimukta,	Price : Rs.	40.00
2.	Ganesh Lalwani-Sraman Sanskriti ki Kavita	Price : Rs.	20.00
3.	Puran Chand Shymsukha-Bhagavan Mahavir O Jaina Dharma.	Price : Rs.	15.00
4.	Prof. Satya Ranjan Banerjee Prasnottare Jaina-Dharma	Price : Rs.	20.00
5.	Dr. Jagatram Bhattacharya Das Baikalik Sutra	Price : Rs.	25.00
6.	Prof. Satya Ranjan Banerjee Mahavir Kathamrita	Price : Rs.	20.00
7.	Sri Yudhishthir Majhi Sarak Sanskriti O Puruliar Purakirti	Price : Rs.	20.00

Some Other Publications :

1.	Dr. Lata Bothra - Vardhamaña Kaise Bane Mahavir	Price : Rs.	15.00
2.	Dr. Lata Bothra - Kesar Kyari Me Mahakta Jain Darshan	Price : Rs.	10.00
3.	Dr. Lata Bothra - Bharat Me Jain Dharma	Price : Rs.	100.00
4.	Acharya Nanesh - Samata Darshan Aur Vyavhar (Bengali)	Price : Rs.	
5.	Shri Suyesh Muniji - Jain Dharma Aur Shasnavali (Bengali)	Price : Rs.	50.00
6.	K.C.Lalwani - Sraman Bhagwan Mahavira	Price : Rs.	25.00
7.	Dr. Lata Bothra- An Image of antiquity	Price : Rs.	
8.	Dr. Lata Bothra - Atma Darshan (Hindi)	Price : Rs.	

NAHAR
5/1 Acharya Jagadish Chandra Bose Road,
Kolkata - 700 020
Phone: 2283 3515, Resi: 2246 7757

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2230-8105/2139,

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
Azimganj House
7, Camac Street, Kolkata - 700 017
Ph: 2282-5234/0329

M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Kolkata - 700 016
Ph: 2226-2418, (Resi) 2454-5650

SURANA MOTORS PVT. LTD.
84 Parijat, 8th Floor, 24A, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700 071, Ph: 2247-7450, 2283-4662

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue, Kolkata- 700 029,
Ph: (S) 2464-1186, (R) 2475-3133

ASHOK KUMAR RAIDANI
M/s. Ashok Trading Corporation
Dealing in All types of Blanket and General Order Supplier
6, Temple Street, Kolkata - 700 072
Ph: 2237-4132, 2236-2072

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
93/4 Karaya Road, Kolkata - 700 019
Ph: (O) 2230 8967, (Resi) 2247 1750

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Kolkata - 700 071
Ph: (O) 2282-8181-4/8780 (R) 2249-1243

SUVGYA BOYED
340, Mill Road, Apt. # 1407
Etobicolse, onterio m9 Cly8
416-622-5583

DR. K.B. SINGH (M.B.B.S.)
67, S.N. Pandit Road, Kolkata - 700 025
Ph: 2455-2081, 2454-7127, Chember- 2268-8670/4207

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Kolkata-700 001
Ph: (B) 2230-2074/8958 (D) 2230-3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2220 9755
Resi: 2464-3235/1541, Fax: (033) 2464 0547

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road, Kolkata - 700 007
Ph: 2268-8677, 2269-6097

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
28, B.T. Road, Kolkata - 700 002
Ph: (O) 2257-1697/7059 (Fact). 2557-1697/7059

COMPUTER EXCHANGE
Park Centre' 24 Park Street
Kolkata - 700 016, Ph: 2229-5047

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazar Street, Kolkata - 700 001
Ph: 2248-5146/6941/3350, Mobile: 9830032021

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No.4
Kolkata - 700 071, Ph: 2229 6256/8730/1029
Resi: 2287-6516
Telex: 2021 2333, ARBI IN, Fax : 2226 0174

PSCO

MECHANICAL ENGINEERS & FABRICATORS.
Howrah Amta Road, Balitikuri Howrah

M/S. POLY UDYOG
Unipack Industries
Manufacturers & Printers of HM; HDPE,
LD, LLDPE, BOPP PRINTED BAGS.
31-B, Jhowtalla Road
Kolkata - 700 017, Phone: 2287-9277, 2287-2826
Tele Fax: 22402825

SAROJ DUGAR
Fancy saree, bed covers
34/1J. Ballygunge Circular Road
Kolkata - 700 019, Phone: 2475 1458

VEEKEY ELECTRONICS
M/s. Madhur Electronics, 29/1B, Chandni Chowk
3rd floor, Kolkata - 700 013
Ph: 2237-6255

KRISHNA JUTE COMPANY
Jute Broker & Dealer
9, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2230-0871/9372, 3022937172
(M) 9330926774

ELECTO PLASTIC PRODUCTS PVT. LTD.
22 Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 2236-3028, 2237-4039

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
M/s. D. C. Group Pvt. Ltd, Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-5229/5121

MOUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrella
45, Armenian Street, Kolkata - 700 001
Ph : (Shop) 3288-8088/2248-8086,
(O) 2268-1396/30924653, Fax : 2271-2151,

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Kolkata - 700 007, Phone : (033)2270-1329, 2272-1033
Fax : 91-33-22702413

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road, Kolkata - 700 001
Ph: 2235-2076, 2235-5701

MUSICAL FILMS (P) LTD
9A, Esplanade East, Kolkata - 700 069

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 007
Ph: Gaddy- 2273-1766, 2268-8846
Mobile: 9331019835, Resi : 2355-9641/7196

B.W.M.INTERNATIONAL & BIKANER WOOLLEN MILLS
4, Srinath Katara, Main Road,
Bhadohi, Pin : 221 401 (U.P.)
Ph: (05414) 225178, 225778, Fax : (05414) 225378 (Bhdohi)
Phone : (0151) 2522404, 2225400, Fax : (0151) 2202256 (Bikaner)

DR. NARENDRA L. PARSON & RITA PARSON
18531 Valley Drive
Villa Park, California 92667 U.S.A.
Phone : 714-998-1447714998-2726,
Fax : 7147717607

V.S. JAIN
Royal Gems INC.
632 Vine Street, Suit# 421
Cincinnati OH 45202
Phone : 1-800-627-6339

RANJIT SINGHI
Singhi Exports (P) Ltd.
P15 New C.I.T. Road
Kolkata - 700 073

RAJIB DOOGAR
305, East Tomaras Avenue
Savoy, IL 61874-9495
USA
Ph : 001-217-355-0174/0187, e-mail : doogar@uiuc.edu

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
C/o Shri P.K. Doogar,
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-56896

M/S. SETHIA OIL INDUSTRIES LTD.
Manufactureres of De oiled cakes & Refined oil.
Lucknow Road, PO. Sitapur - 261001 (U.P.)
Phone: 05862/42017/42073

M/S. BEEKAY VANIJYA PVT. LTD.
City Centre, 19, Synagogue Street
5th Floor, Room No. 534-535, Kolkata - 700 001
Phone: 2210-3239, 2210-3253
Fax: 033-2210-3253 (M) 9831001739
e-mail : bktarfab@satyam.net.in

जो हिंसात्मक प्रवृत्ति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं.
WITH BEST WISHES

DEEPAK KUMAR SANDEEP KUMAR NAHATA
Dealers in Diamond
Manufactures of Precious & Semi Precious Ornaments
63A, Burtolla Street, Kolkata - 700 007,
Phone: (G) 2268-0900 (M) 9830094325

DHANDHIA BROS
6/1 Hara Prasad Dey lane,
Kolkata - 700 007
Phone: (R) 2274-6241/3474 (O) 2269-0581

In the Sweet Memory of my mother
LATE SOVABOTI DUSAJ
Shri Manilal Dusaj
6A, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 001
Phone : 2237-5869, Mobil : 98301017091, 9830142191

With Best Compliment from :-
SURANA WOOLEN PVT. LTD.
MANUFACTURERS * IMPORTERS * EXPORTERS
67-A, Industrial Area, Rani Bazar,
Bikaner - 334 001 (India)
Phone : 22549302, 22544163 Mills
22201962, 22545065 Resi
Fax : 0151 - 22201960
E-mail : suranawl@datainfosys.net

In the memory of Badindrapat Singhji Dugar
GAUTAM DUGAR
34/1/K, Ballygunge Circular Road
Kalkata - 700 019
Phone: (O) 2475-1109/6835
(M) 31022126

ARIHANT JEWELLERS
Shri Mahendra Singh Nahata
M/s. B.B. Enterprises
24 Ray Street, 2nd Floor, Kolkata - 700 00
Phone : 3258-2284/9831030188

M/s. MUKUND JEWELLERS
manufactures of American Diamond
Jewellery, Gold & Silver Goods &
Dealers in imitation Jewellery
P-37A, Kalakar Street,
Kolkata - 700 007, Ph: 2272-3876

KAMAL SINGH KARNAWAT
7,Khelat Ghosh Lane, Kolkata - 700 006
Dealers in Diamonds Precious Stones
Ph: (R) 2259-3885, (M) 03332391278

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Kolkata - 700 020, Ph: (Resi) 2455-3586

M/S. PARSON BROTHERS
18B, Sukeas Lane, Kolkata - 700 001
Phone: 2242-3870

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2248-8576/0669/1242
(Resi) 2225-5514, 2237-8208, 2229-1783

With Best Wishes
INDUSTRIAL PUMPS & MOTOR AGENCIES
40, Strand Road, 4th Floor, R.N.3, Kolkata - 700 001

M.L. CHOPRA & CO.
Freight & Chartering Brokers
12-B, N. S. Road; Kolkata - 1
PH : 2230 5059 / 2230 1130, EMAIL : freya@cal.vsnl.co.in

With Best Compliments From-
STEELUX INDIA; CIVIL CONTACTORS
13/5 Hazi Jakaria Lane, Kolkata - 700 006

SHIV KUMAR JAIN
"Mineral House"
27A, Camac Street, Kolkata - 700-016
Ph: (Off) 2287-7880, 2287-8663, Res) 2287-8128, 2287-9546

MAHENDRA TATER
Block No. 2, 3rd Floor,
45/4A, Chakraberia Road (S)
Kolkata - 700 025

M/S. SARAT CHATTERJEE& CO. (VSP) PVT. LTD.
Regd Office 2, Clive Ghat Street, (N. C. Dutta Sarani)
2nd Floor, Room No. 10, Kolkata - 700 001
Ph: 2230-7162, 2231-5540, Fax : (91)(33)2220 6400
e-mail: sccbss@cal2.vsnl.net.in

APARAJITA BOYED
M/s. Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106, Ph: 2665-3666/2272
e-mail: Suravee@cal2.vsnl.net.in / sona@cal3.vsnl.net.in

SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Kolkata - 700 007, Ph: 2269-1408

BADALIA GEMS PVT. LTD.
BADALIA HOUSE
66/3, Beadon Street, Kolkata - 700 006
Phone : (O) 2554-8999/8997 (R) 2533-9985
Fax : 033 5548999, e-mail : shashibadlia@usa.net

CREATIVE
12, Dargah Road, Post Box 16127, Kolkata - 700 017
Ph: 2240 3758 / 2287-3450/3758, 2281-1690, 2290-0514/3450
Fax : (033) 2240 0098, 2247 1833

JAIPUR EMPORIUM JEWELLERS
Anandlok
227 A. J. C. Bose Road, Kolkata - 700 020
Ph: 2280-0494, 2287-2650, Resi : 2358-0602, (M) 31074937

WITH BEST WISHES
जो एक को जानता है, वह सबको जानता है और
जो सबको जानता है वह एक को जानता है।

CALTRONIX
12 India Exchange Place, 3rd Floor, Kolkata - 700 001
Phone: 2230 1958/4110

PABITRA KUMAR DOOGAR
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-256896

SHRI VIJAY NAHATA
58, Walver Hallow Road
Upper Brook VileNew York - 11545
E-mail : nahata@aol.com

In the sweet memory of our mother
Late Karuna Kumari Kuthari
Jyoti Kumar Kuthari
12, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2230 3142 (O) 2475 0995,
Ranjan Kumar Kuthari
1A, Vidya Sagar Street, Kolkata - 700 009
Phone : 2350 2173, 2351 6969

With Best Compliments from :-
22, Strand Road
2nd Floor
Kolkata - 700 001
Phone : 22131484, Fax : 22131488

BIKASH CHHAJER
Director
SITAL GROUP OF COMPANIES
'Centre Point', 21, Hemanta Basu Sarani
2nd Floor, Room No. 226, Kolkata - 700 001
Phone : 2242-9265, 2210-9228, Fax : (033) 2242-9265
Mobile : 98310 22577, E-mail : finncon@vsnl.net

In the memory of my father
Late Nawaratan mull Singhvi
N. M. SINGHVI
3E, UPASANA, 48, Kali Temple Road
Kolkata - 700 026, Phone : 2466 8186 (R)

In the sweet memory of our Father
Late Devi Singhji Kochar
Shashipal Kochar
Katra Ahluwala
Amritsar - 143 006

ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध, अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।

KUSUM CHANACHUR

Founder : Late. Sikhar Chand Churoria

Our Quality Product of :

Anusandhan	Bhaonagari Ghantia
Kolkata Nasta	Jocker
Badsha Khan	Lajawab
Picnic	Papri Ghantia
Raja	Rim Jhim
Shubham	Tinku

MANUFACTURED BY

M/s. K. K. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Dist: Murshidabad
Pin No.- 742122, West Bengal
Phone No.: 03483-253232,
Fax No.: 03483-253566

KOLKATA ADDRESS:

36, Maharshi Debendra Road, 3rd Floor Room No.- 308
Kolkata - 700 006, Phone No.: 2259-6990, 3293-2081
Fax No.: 033-2259-6989, (M) 9830423668

शस्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
अर्थात् अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Kolkata - 700 071

	Phone:
Gram "GANGJUTMIL"	2226-0881
Fax: + 91-33-245-7591	2226-0883
Telex: 021-2101 GANG IN	2226-6283
	2226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 2634-6441/2644-6442
Fax: 2634 6287

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का हैं।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College, Kolkata

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.
(Formerly: Laxman Singh Jariwala)
Balwant Jain - Chairman

A - 42, Mayapuri, Phase - 1, New Delhi - 110 064
Phone: 28114496, 28115086, 28115203
Fax: 28116184
e-mail: bhansali@mantraonline.com

शुभ कामनाओं सहित —

मनुष्य जीवन में ही सत्य कार्य करने का अवसर उपलब्ध होता है।

अहिंसा अमृत है, हिंसा विष है।

अनाम

PICK UP ALL U WANT UNDER ONE ROOF

▶▶Groceries ▶▶ Edible Oils ▶▶ Personal Care ▶▶ Imported Pastas, Chocolates, Sauces, Gift Items, etc. ▶▶Hygiene ▶▶Baby Care ▶▶Stationery ▶▶other Household Items

Stop 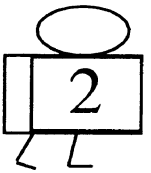 Shop

AT YOUR COMPLETE SUPERMARKET

NAHAR PARK
45/4A, Chakraberia Road (S), Kolkata - 700025
(Near Jadu Babu's Bazar)
Phone: 24544696

Store Timings : 7.00 am to 9pm
All days open except Thursday

All Prices BELOW M.R.P.

FREE HOME DELIVERY

PARKING AVAILABLE

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of pumping stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in place where Columbı eared to tread)

SPML

Engineering Life

SUBHASH PROJECTS & MARKETING LIMITED

113 Park street, Kolkata 700 016
Tel : 2229 8228, Fax : 2229 3882, 2245 7562
e-mail : info@subhash.com, website: www.subhash.com
Head Office: 113 Park Street, 3rd floor, South Block, Kolkata-700016 Ph:(033)2229-8228.
Registered Office: Subhash House, F-27/2 Okhla Industrial area, Phase II New Delhi-110 020
Ph: (011) 692 7091-94, Fax (011) 684 6003. Regional Office: 8/2 Ulsoor Road.
Bangalore 560-042 Ph: (080) 559 5508-15, Fax: (080) 559-5580.

Laying pipelines across one of the nation's driest region, braving temparature of 50° C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreswar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of Paradip.

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres, no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design, Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproof Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

With Best Compliments

B.C. JAIN JEWELLERS
Since 1976

B.C. JAIN JEWELLERS PVT. LTD.

22, Camac Street
3rd floor, Block-A
Kolkata - 700 007
Phone: 2283 6203 / 6204 / 0056
Fax : 2283 6643
Resi : 2358 6901, 2359 5054

TITTHAYARA
Vol XXX. No. 9
25th December 06

Registered
No SSRM/KOL /RMS/WB/ RNP - 070/2004-06
R N I 30181/77

ज्ञानी वही है जो किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। सभी जीव जीना चाहते है मरना कोई नहीं चाहता अतः संसार के त्रस और स्थावर सभी प्राणियों को जाने या अनजाने में न मारना चाहिये, न दूसरों से मरवाना चाहिये, ना ही मन वचन काया से किसी को पीड़ा पहुँचाना चाहिये।

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions

17/3, Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 2666-7212/7225